ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-10*November- 2021
Innovation The Research Concept

शेखावाटी क्षेत्र के महत्वपूर्ण शिलालेख: एक अध्ययन

Important Inscriptions of the Shekhawati Region: A Study

Paper Submission: 15/11/2021, Date of Acceptance: 23/11/2021, Date of Publication: 24/11/2021

नरेश अभय
शोधार्थी,
इतिहास विभाग,
राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर,
राजस्थान, भारत

सारांश

पुरातात्विक स्त्रोतों के रूप में सबसे महत्त्वपूर्ण स्थान शिलालेखों का आता है। शिलालेख पत्थर अथवा धातु जैसी अपेक्षाकृत कठोर सतहों पर उत्कीर्ण किये गये पाठन सामग्री को कहते हैं। इनमें वंशावली, विजय, दान, उपाधियाँ, शासकीय नियम, उपनियम, सामाजिक नियमावली आदि का विवरण होता है। शेखावाटी क्षेत्र के शिलालेख अशोक के काल से प्रारम्भ होते हैं जो कि कूप, बावड़ियों, मस्जिदों, मन्दिरों के कीर्ति स्तम्भों, मंदिरों की दीवारों, प्राचीन स्मारकों, प्रस्तर प्रतिमाओं, शिलाओं, प्रस्तर-पट्टिकाओं आदि पर उत्कीर्ण है।

The most important place in the form of archaeological sources comes from inscriptions. Inscriptions are called reading material engraved on relatively hard surfaces like stone or metal. They contain details of genealogy, victory, donations, titles, government rules, bye-laws, social rules, etc. The inscriptions of the Shekhawati region start from the period of Ashoka, which are engraved on wells, stepwells, mosques, temple pillars, temple walls, ancient monuments, stone statues, stones, stone slabs etc.

मुख्य शब्द: शेखावाटी, जीणमाता शिलालेख, हर्षनाथ शिव मंदिर का शिलालेख।

Keywords: Shekhawati, Jeenmata inscription, Harshnath Shiva temple inscription.

प्रस्तावना

किसी भी इतिहास रचना की प्रामाणिकता उससे संबंधित साक्ष्यों की विश्वसनीयता एवं प्रामाणिकता पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से इतिहास से संबंधित साक्ष्यों का समग्र एवं निष्पक्ष अध्ययन अपेक्षित है। शेखावाटी में भिन्न-भिन्न स्थानों से अनेक शिलालेख प्राप्त हुए हैं जो शेखावाटी के विभिन्न पहलुओं - राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं। शेखावाटी के ये शिलालेख अशोक के काल से प्रारम्भ होते हैं जो कि कूप, बावड़ियों, मस्जिदों, मन्दिरों के कीर्ति स्तम्भों, मन्दिरों की दीवारों, प्राचीन स्मारकों, प्रस्तर प्रतिमाओं, शिलाओं, प्रस्तर-पट्टिकाओं आदि पर उत्कीर्ण हैं।

शेखावाटी क्षेत्र के अभिलेखों के अन्तर्गत मुख्य रूप से खेतड़ी के तालाब पर अंकित शिलालेख, बैराठ शिलालेख, जीणमाता का शिलालेख, निराधनऊ स्थित रघुनाथ जी के मंदिर का शिलालेख, राणौली की छतरी के शिलालेख, हर्ष के शिलालेख, मनोहरपुर का शिलालेख, उदयपुरवाटी का शिलालेख, झुन्झुनूं शिलालेख, फतेहपुर स्मारक का शिलालेख, राव राजा माधोसिंह शिलालेख, खोह (रघुनाथगढ़) के शिलालेख, खाटूश्यामजी शिलालेख, खण्डेला शिलालेख, सकराय शिलालेख, काली बाय (बावड़ी) का शिलालेख, मून जी के मंदिर का शिलालेख, माजी की बावड़ी का शिलालेख, खण्डेला शहर के शिलालेख, पन्नाशाह तालाब खेतड़ी का शिलालेख आदि महत्वपूर्ण है। कुछ महत्वपूर्ण शिलालेखों का विवरण निम्नानुसार है:-

जीणमाता शिलालेख (वि.सं. 1699)

आषाढ़ सुदी 15, सोमवार वि.सं. 1699 का शिलालेख है जिसमें माता के मंदिर के जीर्णोद्धार का वर्णन है।

मंदिर का निर्माण मोहिल के पुत्र हठड़ ने करवाया। मंदिर की छतों, दीवारों एवं स्तंभों पर बौद्ध तांत्रिकों तथा वाममार्गियों की तपस्या और साधना से सम्बन्धित अनेक निर्वसन पाषाण प्रतिमायें बनी हुई हैं। जिससे यह प्रतीत होता है कि संभवतः पूर्व में यह स्थान तांत्रिकों एवं वाममार्गियों का साधना स्थल रहा हो। मंदिर की दीवारों पर तांत्रिकों और वाममार्गियों की मूर्तियाँ लगी हुई हैं। आज भी यह तांत्रिकों की शक्ति पीठ है।[1]

हर्षनाथ शिव मंदिर का शिलालेख

जिला मुख्यालय सीकर से लगभग 11-12 किलोमीटर एवं जयपुर से लगभग 90 किलोमीटर पर प्राचीन हर्षनाथ का स्थान है। यहाँ शिव मंदिर है। इस स्थान को हर्षनाथ भैंरू भी कहते हैं। चौहानों के राज्यकाल में इस स्थान को हर्षपुर एवं हर्षनगरी के नाम से भी जाना जाता था। ''सर्वतीर्थमाल'' वि.सं. 1123 में मुनि सिद्धसेनसूरी द्वारा लिखाई गई थी जिसमें हर्ष का संदर्भ आया है।

	हर्षनाथ स्थित शिव मंदिर का विध्वंस मुगल बादशाहों द्वारा किया गया। किन्तु इसको कब, किसने धराशाही एवं खण्डित किया इसकी कोई निश्चित जानकारी नहीं है तथापि यह अनुमान लगाया जा सकता है कि औरंगजेब के शासन काल में जब उसके सेनानायक दाराब खां, करतलब खां एवं सिदीविरहाम खां ने इस क्षेत्र के खण्डेला, खाटूश्याम जी आदि मंदिरों को तोड़ने का अभियान (वि.सं. 1736) चलाया था। उसी अवधि में इस शिव मंदिर का भी विध्वंस किया होगा। इस लेख में कुल 48 छंद हैं। प्रथम 12 छंदों में भगवान शिव के महात्म्य का वर्णन है। श्लोक क्रमांक 13 से 27 चौहान राजाओं की कुल-परम्परओं का संदर्भ है। हर्ष मंदिर सं. 1013 में बनकर तैयार हुआ था। इसके निर्माता अल्हट की मृत्यु वि.सं. 1027 में हुई थी। पद्य भाग के साथ-साथ उन गाँवों की सूची दी गई है जो आषाढ़ सुदी 15, 1030 वि. तक विभिन्न व्यक्तियों द्वारा मंदिर को भेंट किये गये थे। यह शिलालेख आषाढ़ शुक्ल 15 (पूर्णिमा) का है।[7]
खण्डेला शहर के शिला लेख (ईसा से 300 वर्ष पूर्व)	खण्डेला के पास, पहाड़ की घाटी में स्थित एक शिलालेख खण्डेला में अभी तक प्राप्त शिलालेखों में प्राचीनतम शिलालेख है। यह शिला-लेख ईसा से 300 वर्ष पुराना है। इस शिलालेख की "लिपि अशोक के शिलालेखों की लिपि से बिल्कुल मिलती-जुलती है।" डॉ. ओझा के मतानुसार उसका समय ईसा से 300 वर्ष पूर्व का अनुमानित किया गया है। इस शिलालेख का दाहिनी ओर का हिस्सा टूट जाने के कारण लेख का पूरा मतलब नहीं निकल सकता, किन्तु ऐसा जान पड़ता है कि कोई मूला के द्वारा विषैले तीर से मार डाला गया था और उसकी स्मृति में उसके शिष्य माहीस ने स्मारक बनवाया।[1]
सकराय शिलालेख (वि.सं. 749)	सकराय माता के प्राचीन मंदिर के सामने देवताओं का मण्डप बनाने वाले ग्यारह गौष्ठिकों (न्यास प्रबंधकों) के नाम सकराय शिलालेख में उत्कीर्ण हैं। वे सभी ढूसर एवं धर्कट गौत वाले वणिक थे। सकराय प्रशस्ति वि.सं. 749 का रचयिता-काव्य प्रतिभा का धनी था। उक्त प्रशस्ति से जाना जाता है कि मंदिरों में श्री गणेश की प्रतिमा के साथ ही धनद (कुबेर) की प्रतिमा भी स्थापित की जाती थी।[4]
सत्ते का लेख (वि.सं. 1889)	यह शिलालेख सत्ते (स्त्री सती होती है। पुरूषादि स्त्री के साथ ज्वालाग्नि लेता है तो उसे सत्ता कहा जाता है।) जो वि.सं. 1889 का है। शिलालेख में अंकित अक्षर घिस गये हैं। इस शिलालेख की पूजा होती है तथा श्रद्धालू इस पर झाड़ू और बैंगन चढ़ाकर रोगमुक्ति की कामना करते हैं[5]
रानोली शिलालेख (वि. सं. 1865)	यह शिलालेख रानोली में छतरी पर स्थित है। इसमें नीम के थाणे की लड़ाई में शिवसिंह के 14 उमरावों सहित मारे जाने का उल्लेख है। यह लेख छतरी के स्तम्भ के ऊपरी भाग में स्थित है।[6]
केड की छतरी का शिलालेख (वि.सं. 1752)	जमींदार और जागीरदार श ब्दों के अर्थ और भेद को समझने के लिए यह एक उपयोगी लेख है। वि.सं. 1752 में ये दोनों लोक प्रचलित शब्द थे और स्थानीय जनता इनके भेद और अर्थ को बखूबी समझती थी।[7]
रैवासा के शिलालेख (वि.सं. 1283)	यह शिलालेख वि.सं. 1283 का जानकीनाथ जी के मंदिर के अहाते में स्थित है। पृथ्वीपाल देवराजेन्द्र (चौहान सम्राट पृथ्वीराज तृतीय) के शासनकाल में चंदेल परगने के खलुवाणा गाँव के चंद्रवंशी चंदेल सिंह राज का पुत्र चंदेल कुलीन अथवा "चंदेल नानक" देव लोक गया। उसकी स्मृति में चंदेल जसराज ने यह शिलालेख स्थापित किया।[8]
अध्ययन का उद्देश्य	इस लेख में मुख्यतः शेखावाटी क्षेत्र के शिलालेखों में वर्णित समाज राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म, संस्कृति का ऐतिहासिक वर्णन है। शिलालेख समय के मूक द्रष्टा होते हैं। इनमें राजाओं के द्वारा कराये गये कार्यों, राजा की उपाधियों, वंशावलियों आदि का विवरण मिलता है। इस लेख में शिलालेखों के द्वारा सांस्कृतिक निरन्तरता की प्रक्रिया कीयाख्या संक्षिप्त रूप में की गई है।
निष्कर्ष	निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शेखावाटी क्षेत्र से प्राप्त शिलालेखों के अध्ययन के आधार पर शेखावाटी क्षेत्र के जन-मानस के धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक जीवन के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है।
सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	1. *पंडित झाबरमल शर्मा व पंडित श्याम सुन्दर शर्मा, खाटू के श्याम बाबा का इतिहास, पृ.सं. 121* 2. *डॉ. रघुनाथ प्रसाद तिवाड़ी, खण्डेला क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव (2011) पृ.सं. 96* 3. *रतनलाल मिश्र, राजस्थान के शिलालेख: शेखावाटी प्रदेश, पृ.सं. 32* 4. *डॉ. रघुनाथ प्रसाद तिवाड़ी, खण्डेला क्षेत्र का सांस्कृतिक वैभव (2011), पृ.सं. 91* 5. *सुरजन सिंह शेखावात, शेखावाटी के शिलालेख, पृ.सं. 52-56* 6. *आइन-ए-अकबरी-भाग 2 पृ.सं. 176, 177 (ब्लॉचकमैन का अंग्रेजी अनुवाद)* 7. *डॉ. एच.एस. आर्य, शेखावाटी का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास (2013) पृ.सं. 258* 8. *डॉ. दशरथ शर्मा, लेख संग्रह, प्रथम भाग, पृ.सं. 101, 103, 104*